Enhancement of acreage under tobacco cultivation

8347. SHRI S. AUSTIN: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether there is any proposal to enhance the acreage undr tobacco cultivation;

(b) whether any lands in Tamil Nadu have been found suitable for tobacco cultivation; and

(c) if so, the details thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ARVIND NETAM): (a) Tobacco Board under Ministry of Commerce fixes the target of Flue Cured Virginia (FCV) tobacco taking into account the domestic and export demand as well as carry over stock etc. It has increased the authorised area for FCV tobacco in Karnataka for 1995-96. Target for FCV crop area in Andhra Pradesh will be decided in July, 1995.

(b) and (c) Non-Virginia tobacco types like Chewing, Cigar and Cheroot are being grown in Tamil Nadu in the districts of Periyar, Coimbatore, Quaid E-Milleth, Thanjavur and Salem.

कपास का उत्पादन

8348. श्रीमती सुषमा स्वराज :
श्री राम जेठमलानी :

क्या **कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश के बहुत बड़े भू-भाग में कपास का उत्पादन होता है;

(ख) यदि हां, तो देश में कुल कृषि भूमि में से कितने प्रतिशत भूमि पर कपास का उत्पादन गत वर्षों में किया जा रहा है ;

(ग) क्या यह भी सच है कि प्रमाणिक बीज यथेष्ट मात्रा में उपलब्ध न होने के कारण देश में कपास-उत्पादन की दर इसकी विश्व-स्तरीय औसत उत्पादन दर से काफी कम है ,

(घ) यदि हां, तो विश्व स्तर पर तथा स्वदेशी स्तर पर कपास की उत्पादन दर का क्या-क्या अनुमान है; और

(ङ) देश में कपास-उत्पादन में कितने प्रतिशत प्रमाणिक बीजों का उपयोग किया जा रहा है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविंद नेताम) : (क) तथा (ख) कपास की खेती के अंतर्गत आने वाला कुल क्षेत्र देश के कुल फसल क्षेत्र का लगभग 4% है।

(ग) देश में कपास का औसत उत्पादन विश्व की तुलना में बहुत कम है जिसके विभिन्न कारण हैं, यथा-कपास के अंतर्गत का सिंचित क्षेत्रों का होना, उत्पादन प्रोद्योगिकी को कम अपनाना, सामाजिक आर्थिक कारक आदि/अतः प्रमाणीकृत बीजों की उपर्याप्त उपलब्धता को ही इस कमी का एक मात्र कारण नहीं माना जा सकता है।

(घ) 1993 के आंकणों के अनुसार, विश्व तथा भारत में कपास की प्रति हैक्टेयर औसत उपज अनुमानित तौर से क्रमशः 545 कि० ग्रा० तथा 248 कि० ग्रा० थी ।

(ङ) इस समय देश में उपलब्ध प्रमाणित/गुणवत्ता वाले बीजों की मात्रा-कपास के 30% क्षेत्र में प्रयोग करने के लिए पर्याप्त है ।

कृषि उत्पादन की दर में कमी

8349. श्री राम जेठमलानी :
श्रीमती सुषमा स्वराज :

क्या **कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश में प्रमाणिक बीज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध न होने के

कारण कृषि उत्पादन की औसत दर में अपेक्षा से बहुत अधिक कमी आई ;

(ख) यदि नहीं, तो गेहूं और चावल के संबंध में प्रमाणिक बीजों का उपयोग करने से तथा गत वर्ष फसल के उत्पादन को बीज के रूप में उपयोग करने से उत्पादन की औसत-दर के संबंध में क्या-क्या आकलन है ;

(ग) क्या यह भी सच है कि देश में पिछले कुछ वर्षों के दौरान कृषि के लिए कुल आवश्यक बीज का औसतन मात्र 12 प्रतिशत के लगभग ही प्रमाणित बीज उपलब्ध हुए हैं;

(घ) यदि नहीं, तो इस संबंध मे सरकार का क्या आकलन है ;

(ङ) क्या सरकार ने देश में प्रचुर मात्रा में प्रमाणिक बीज उपलब्ध कराने हेतु कोई भावी कार्य-योजना तैयार की है; और

(च) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एस० कृष्ण कुमार) : (क) आवश्यकता पड़ने पर प्रमाणित/गुणवत्ता वाले बीज प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध कराये गये थे । अतएव: प्रमाणित/गुणवता वाले बीजों की अनुपलब्धता के कारण कृषि उत्पादन में कोई कमी नहीं आई ।

(ख) औसतन अप्रामाणित बीजों की तुलना में प्रमाणित बीजों का उपयोग किये जाने से 5 से 10% तक की वृद्धि हुई है ।

(ग) तथा (घ) 1993–94 के दौरान कुल प्रमाणित/गुणवता वाले बीजों की आवश्यकता/उपलब्धता क्रमश: 67.79 लाख क्विंटल तथा 71.69 लाख क्विंटल थी जबकि 1994–95 के दौरान यह क्रमश: 69.47 लाख क्विंटल तथा 80.00 लाख क्विंटल थी । वह प्रमाणित/गुणवता वाले बीजों के प्रत्यक्ष उपयोग से जुड़े हुए क्षेत्र से सम्बन्धित है किन्तु गैहुं तथा धान जैसी फसलों के मामले में जो काफी बड़े क्षेत्र में उगाई जाती है, प्रमाणित बीजों का उपयोग किसी एक वर्ष में किया जाता है तथा इसके बाद के दो वर्षों में इस बीज की सन्तति का उपयोग बुवाई में किया जा सकता है और इस प्रकार अधिकांश क्षेत्र उपर्युक्त गुणवता वाले बीज से कवर हो जाता है ।

(ङ) तथा (च) विभिन्न केन्द्रीय योजनाओं तथा राष्ट्रीय बीज परियोजना चरण III के अतर्गत आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिये प्रमाणित बीजों के उत्पादन/विवरण पर सहायता दी जाती है ताकि प्रचुर मात्रा में प्रमाणित/गुणवता वाले बीज उपलब्ध कराये जा सकें ।

Integrated Pest Management

8350. SHRI PRAGADA KOTAIAH:
DR. SHRIKANT RAMCHANDRA JICHKAR:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) the latest steps being taken in the area of Integrated Pest Management;

(b) the details of the various schemes available to the farmers for the purpose of pest management;

(c) the details of the bio-control agents released;

(d) the manner in which pest surveillance is done; and

(e) the amount of money being spent annually on pest management programmes?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI S. KRISHNA KUMAR): (a) and (b) The latest steps being taken in the area of Integrated Pest Management include;

(i) Adoption of IPM as cardinal principle and main plank of plant protection.